# कड़ी सं.– 32

# आने वाला कल

# सच्चा दोस्त...

आलेख व अनुसंधान– डॉ. अनुराग शर्मा
संकल्पना और समन्वय : डॉ. बी.के. त्यागी

परिचयः–
सूत्रधार– नमस्कार, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई की कहानी और किस्से कहता हमारे धारावाहिक *आने वाला कल* की आज की कड़ी में आप सभी का स्वागत है। क्या आपने कभी कल्पना की है कि एआई के कंधों पर चढ़कर हम किस दुनिया में पहुंचने की तैयारी में हैं? सोचिए आज से करीब चार सौ साल बाद की दुनिया कैसी होगी? शायद? टेक्नॉलाजी पर हम कुछ राय बना भी सकते हैं जैसे, उड़ने वाली कारें या कहें उड़ने वाला मानव, काम करने वाले रोबोट्स, ब्रह्मांड की सैर में निकला मानव, चंद्रमा, मंगल, और ना जाने कितने ग्रहों पर मानव बस्तियां आदि आदि...पर आज से चार सौ से साल बाद मानव को किन विषय पर निर्णय लेने होंगे? क्या तब भी मानव के सामने लालच, जलन, हिंसा, अविष्वास आदि बुराइयों का ऐसा ही घेरा होगा? क्या मानव कभी अपनी बुराइयों पर विजय हासिल कर पाएगा? या टेक्नोलॉजी की तरक्की के साथ मानव की बुराइयां भी खत्म हो जाएंगी? कहीं ऐसा तो नहीं ये बुराइयां पूरे ब्रह्मांण में ही व्याप्त हों? क्या हमारे आने वक्त में मशीनें इन्हीं बुराइयों में लिप्त होकर मानव की ही दुष्मन बन जाएंगी? या फिर मानव को ये मशीनें ही सकारात्मकता का रास्ता दिखाएंगी? वैसे हो सकता है जिन मशीनों के बारे में हम सोचते हैं कि वो कल हम पर ही सत्ता चलाएंगी...क्या पता न्याय करने में वो मानवों से बेहतर हो और उनके यहां ना देर हो और ना अंधेर? चलिए आज हम आपको आज से चार सौ साल बाद की काल्पनिक दुनिया में ले चलते हैं...जब मानव और मशीन का फर्क ही खत्म हो चुका है और मानव अब एक ग्रह यानी पृथ्वी तक सीमित नहीं है बल्कि मल्टी प्लानेट स्पीशीज़ यानी अनेक ग्रहों पर रहने वाली प्रजाति बन चुका है। लेकिन अब है तो मानव ही ना अपनी हरकतों से बाज थोड़े ना आएगा...तो ऐसी क्या हरकत की है मानव ने... और वो भी दूसरे ग्रह के मानवों ने किसी अन्य ग्रह के मानवों के खिलाफ...चलिए जानते हैं... वैसे मानव ही मानव का दुष्मन होता है...अं...ऐसा ही कुछ कहते हैं...पर क्या सच में मानव ही मानव का दुष्मन है? क्या मशीन मानवों की दुष्मन हो जाएगी? कौन के मानव का सच्चा दोस्त? चलिए जानते हैं हमारे धारावाहिक – *आने वाला कल* – की आज की विज्ञान कथा– *सच्चा दोस्त...*में

पात्र:

डॉक्टर गौरव– मानव व्यवहार पर काम करने वाले, आवाज करीब 30 वर्षीय व्यक्ति की...

सुनीता– एक मशीन, जिसकी आवाज मानवों की तरह ही है...डॉक्टर गौरव की दोस्त

(सुबह का संगीत और कुछ बहस की आवाजें...)

**आवाजः** आप सभी जानते हो कि विकेशी ग्रह पर हो रही इस बैठक में हमें निर्णय अगले दो दिनों में ही करना है। हां...तो आप लोग इस बात से सहमत हैं कि मेदिनी ग्रह के लोगों ने अछला ग्रह पर उन नैनोरोबोट्स से हमला किया था, जो पर्यावरण में गैसों के घटकों में बदलाव करके धीरे धीरे अछला ग्रह की जलवायु में परिवर्तन कर रहें हैं...

**सुनीताः** जी सेंट्रल...अछला पर ये हमला एक सौ दस साल पहले शुरू हुआ था और इससे कई लोगों की जान भी गई है...ये एक गंभीर अपराध है...

**गौरवः** मुझे भी यही लगता है कि मेदिनी ग्रह वालों ने ये गलत किया है...वे इतने बड़े नरसंहार के लिए वे ही जिम्मेदार और आज के समय में भी ऐसे मानव हैं तो मानवता के भविष्य के लिए इनका खात्मा आवष्यक है...

**सेंट्रलः** आप कहना क्या चाहते हैं...कुछ लोगों की गलती की सजा पूरे मेदिनी ग्रह के लोगों को दी जाए?

**गौरवः** जी, और मुझे तो लगता है कि ये सोच पूरी मानव सभ्यता में ही भरी हुई है...

**सुनीताः** तो गौरव जी, आप कहना क्या चाहते हैं?

**गौरवः** हम कई शताब्दियों से ही देख रहे हैं...मैं बहुत लंबे समय से मानव व्यवहार पर कार्य कर रहा हूं...और मैंने अपने शोध में पाया है कि मानव के मन में ही जलन, लालच, हिंसा आदि बुराइयां भरी हुई हैं...

**सुनीताः** गौरव तुम तो ऐसे बात कर रहे हो जैसे मानव और मशीन में कोई फर्क हो?

**गौरवः** ठीक है आज मशीन और मानव में कोई फर्क नहीं है और मशीनों, रोबोट्स, बायोनिक्स, एंडिरॉयड आदि से कोई शिकायत भी नहीं है, पर आज से सैंकड़ो साल पहले मानव जैसे सोचने में सक्षम मशीनों का आविष्कार हुआ था...पर तमाम मानवीय बुराइयों के बावजूद, मशीनों ने अपनी खामियों पर विजय पा ली. ..पर...

**सेंट्रलः** पर...पर...क्या गौरव? आप ये तो नहीं कहना चाहते कि पूरे मेदिनी ग्रह के मानवों को सजा देनी चाहिए?

**गौरवः** जी नहीं सेंट्रल...मैं ये नहीं कह रहा कि मेदिनी ग्रह के सभी मानवों को सजा दी जाए, बल्कि मैं कहता हूं कि ये पूरी मानव सभ्यता की समस्या है और अब इससे पूरे संसार...पूरे ब्रह्मांड को छुटकारा पा लेना चाहिए...

**सुनीताः** **हैरानी से–** डॉक्टर गौरव आप कहना क्या चाह रहे हैं?

**गौरवः** सुनीता...सेंट्रल मैं कहना चाहता हूं कि मानव की बुराइयां पूरी प्रणाली में बस गई हैं, इन्हें ठीक किया जा सकता है...परंतु मानव की सोच को बदलना बेहद

मुष्किल है...लालच, क्रोध, अविष्वास आदि बुराइयों से छुटकारा पाने का अब एक ही तरीका है...

**सुनीताः** **घबराहट से–** क्या तरीका है गौरव...क्या?

**गौरवः** यही कि इनके स्रोत को ही खत्म किया जाए। इसलिए मैं मानता हूं कि अब मेरे समेत पूरी मानव सभ्यता को नष्ट करने का समय आ गया है...और सेंट्रल या फिर सुनीता ये करने में सक्षम है, इसलिए इसपर अभी तुरंत निर्णय लिया जा सकता है...

**सेंट्रलः** पर हम दोनों ही ये निर्णय नहीं ले सकते? या लेना चाहेंगे?...क्योंकि जब से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग आदि का उदय हुआ...सभी प्रौद्योगिकियों का एक ही मकसद था कि किसी भी सूरत में मानव जीवन की रक्षा करना और अगर देखा जाए तो हमारा अस्तित्व ही मानव की वजह से है और पूरी मानव सभ्यता के साथ ये धोखा हम नहीं कर सकते...तुम्हारा क्या कहना है सुनीता?

**सुनीताः** डॉक्टर गौरव आप मेरे बहुत अच्छे दोस्त हैं...आप जानते हैं कि आज टेक्नोलॉजी इतनी आगे जा चुकी है कि आज मृत्यु का भय खत्म हो चुका है... इसका कारण है कि सभी मेमोरी...याददाष्त...विचार...आदि पूर्णतः सुरक्षित रहते हैं और आगे आने वाली पीढ़ियों में डाल दिए जाते हैं...इसलिए मेरा मानना है कि कोई अन्य सजा तय की जानी चाहिए...जैसे...

**गौरवः** नहीं...सुनीता...सेंट्रल...मैं कोई पागल नहीं हूं...सुनीता मैं तुम्हें अपना सच्चा दोस्त मानता हूं और मेरा अपना परिवार भी है...मशीन को मानव जैसा बनाने में मेरे पुरखों का भी योगदान रहा है...

**सेंट्रलः** तो आप किस आधार पर इतना बड़ा फैसला लेने की बात कह सकते हैं?

**गौरवः** सेंट्रल, मैं पूरी तरह वैज्ञानिक आधार पर ही कह रहा हूं कि अब वक्त आ गया है कि मानवों से इस ब्रह्मांड को मुक्त किया जाए...क्योंकि तमाम अच्छाइयों के बावजूद सभी बुराइयों का कारण भी मानव ही है और जितना ये फैलता जाएगा...उतनी ब्रह्मांड में बुराइयां भी पनपती जाएगी...

**सुनीताः** पर हर समस्या का समाधान तो मिल ही सकता है...

**सेंट्रलः** **ऊंची आवाज में–** अलर्ट...डिमोलिशर्स...अलर्ट...डॉक्टर गौरव अपने इरादों में पक्के हैं...इन्हें गिरफ्त में लिया जाए...डिमोलिशर्स...

**सुनीताः** **चिल्लाकरः** नहीं सेंट्रल...आप ऐसा मत करिए...मैं गौरव को समझाती हूं...नहीं. ..सेंट्रल...

**सेंट्रलः** **ऊंची आवाज में–** अलर्ट...डिमोलिशर्स...अलर्ट...डॉक्टर गौरव और डायेक्टर सुनीत को तुरंत गिरफ्त में लिया जाए...डिमोलिशर्स...तुरंत कार्रवाई हो...

**– सेंट्रल की आवाज गूंजते हुए धीमी होती जाती है जैसे कहीं दूर जा रही है–**

**– दृष्य परिवर्तन का संगीत –**

**गौरवः** **लगभग चिल्लाते हुए–** नहीं तुम ऐसा नहीं कर सकतीं...क्या ये जरूरी नहीं है कि मानव को नियंत्रित किया जाए? उसकी हरकतों, उसकी साजिशों को...सारी नेगेटिविटी को अब बंद किया जाए? नहीं अब मानव को खत्म होना ही होगा और तुम इसमें बाधा मत बनों...

**सुनीताः** क्या बात करते हो डॉक्टर गौरव...मानव को कभी खत्म नहीं किया जा सकता और तुम खुद एक मानव होकर ये बोल रहे हो कि मानव को खत्म होने दो! ये तुम कह रहे हो...क्यों?

**गौरवः** मैं क्यों कह रहा हूं इसकी वजह बताता हूं सुनीता, लेकिन तुम...भले ही मानव जैसी दिखती हो...तुम हो तो मशीन ही ना? तुम क्यों चाहती हो कि मानव बचा रहे...और जबकि तुम्हारे साथ क्या मानव का बर्ताव सही है? और क्या मानव के साथ मानव का बर्ताव सही है?

**सुनीताः** गौरव...तुम समझे नहीं बात कभी भी मानव या मशीन की थी ही नहीं...मानव और मशीन का फर्क तो आज से करीब चार सौ साल पहले सन् दो हजार चालीस में ही खत्म हो गया था...

**गौरवः** हां दो हजार चालीस कुछ कुछ पढ़ा याद है मुझे...

**सुनीताः** **हां** गौरव, जब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और ना जाने क्या क्या टेक्नोलॉजी पूरी दुनिया पर छा गईं थीं...

**गौरवः** तो तुम कहना क्या चाहती हो...हमें मानव को पूरी तरह नष्ट करने का प्रोग्राम एक्टिवेट नहीं करना है...और...और...तुम जानती हो कि हम दोनों के बचने के लिए मानव को नष्ट करना आवष्यक है और इसका कोड़ तुम्हारे पास है और तुम मेरी सच्ची दोस्त हो और मेरी हर बात मानती हो...फिर ये विरोध क्यों?

**सुनिताः** गौरव...तुम भी एक मानव की तरह सोच रहे हो और मैं भी...हम भले ही आज पृथ्वी ग्रह से कई करोड़ किलोमीटर दूर इस ग्रह विकेशी पर हैं, जिसमें रहते हुए हमें एक सौ सत्तर साल हो गए हैं...तुम तो पैदा भी इसी ग्रह में हुए हो और मैं तो पहले बैच का हिस्सा थी, जो पृथ्वी से करीब दो सौ साल पहले एक अंतरिक्ष यान में इस ग्रह की ओर चला था...

**गौरवः** मुझे सब याद है सुनीता...जन्म और मृत्यु का तो कोई मतलब ही नहीं है...हम कब से इस चक्र से निकल चुके हैं...क्योंकि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के द्वारा हमारी मेमोरी...हमारी याददाष्त...तो अब कभी खत्म नहीं होती... है ना?

**सुनीताः** **कुछ सोचते हुए–** हां मैं भी तो सुनीता की ही चेतना हूं...जो पृथ्वी पर करीब साढ़े तीन सौ साल पहले मर चुकी थी...पर हां तुमने ठीक कहा कि उसकी याददाष्त जिन्दा है...उसकी चेतना जिन्दा है...इसलिए अब कोई शरीर भले ही किसी दुर्घटना में नष्ट हो जाए पर वो व्यक्ति नहीं मरता, क्योंकि उसकी चेतना जीवित रहती है...

**गौरवः** ओहो...सुनीता तुम ये बीच बीच में कहा खो जाती हो...ये सब मैं जानता हूं...मैं क्या इस ग्रह विकेशी पर पैदा हुआ हर व्यक्ति ये जानता है...क्योंकि सभी में मेमोरी एक केंद्रीय यूनिट द्वारा ही डाली जाती है...पर अब वो केंद्रीय यूनिट ही हमारी दुष्मन हो गई है...क्योंकि...क्योंकि...

**सुनीताः** क्योंकि हम एक नए मानव के रूप की कल्पना कर रहे थे...ऐसा मानव जो एआई, जेनेटक इंजीनियरिंग की पैदाइश नहीं होगा, एक ऐसा मानव जो संसार के हर बंधन से मुक्त होकर सोचेगा...

**गौरवः** पर क्या ऐसा हुआ सुनीता?

**सुनीताः** होगा...सोचो गौरव, कभी मानव सभ्यता सिर्फ पृथ्वी तक ही सीमित थी, पर आज ब्रह्मांड के साठ से अधिक ग्रहों में हम बस गए हैं और सैंकड़ों यान पांच से छह हजार मानवों को लेकर अंतरिक्ष में अपने लिए एक उपयुक्त ग्रह की तलाश में बिखरे हुए हैं...पर...

**गौरवः** पर ये ही ना...कि सब कुछ होते हुए भी कितना खोखला है ये जीवन...सबकुछ पा लेने के बावजूद...अभी भी कितना अधूरा है ये जीवन...मानव, मशीन का अंतर खत्म हो चुका है...

**सुनीताः** तो क्या आज वो हर सुख उपलब्ध नहीं है, जिसकी कभी मानव ने कल्पना की थी?

**गौरवः** हां सुनीता, कहने को हर सुख है और फिर भी एक नया संघर्ष जन्म ले ही लेता है...आज भी मानव, मानव से ही लड़ रहा है और आज भी अनेक पंथों में बंटा है...इसलिए मैं कहता हूं कि जितने भी मूल मानव हैं...सभी को खत्म करने का समय आ गया है...

**सुनीताः** पर गौरव तुम क्या इस कन्फिलिक्ट के लिए मानव को ही दोषी मानते हो?

**गौरवः** अरे भई पर पूरा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ही मानव के डाटा पर आधारित था तो ये होना ही था...सिंगुलेरिटी आ गई सबकुछ मशीन के हाथ में है, पर कन्फिलिक्ट यानी टकराव यानी द्वंद खत्म ही नहीं हो रहा...इसीलिए मानव की मूल नस्ल को खत्म करना होगा...

**सुनीताः** और उससे जुड़ी यादों का क्या होगा...और एआई का क्या होगा जो मानव के विचारों, स्मृतियों के आधार पर ही तैयार हुई थी...और मेरा क्या होगा...मैं भी तो मानव की तरह सोचती हूं...महसूस भी करती हूं...और जीवित रहना चाहती हूं... क्या पूरी प्रणाली ध्वस्त की जा सकती है?

**गौरवः** देखो सुनीता हम अभी तो हम इस इलैक्ट्रोमैग्नेटिक बबल में हैं, लेकिन जल्द ही इसे भी ढूंढ लिया जाएगा और हम अपना काम खत्म नहीं कर पाएंगे...हमें सभी ग्रहों में जीवन पर ब्रेक लगाने वाला वाइरस अब सिस्टम में डालना होगा... हम सभी जीव, मशीन आपस में जुड़े हैं...पर तुम्हारे एक प्रयास से सब नष्ट हो जाएगा...और...

**सुनीताः** और फिर जीवन नए रूप में उदय होगा...बिल्कुल नई सोच के साथ...फिर से जीवन की एक नई शुरूआत होगी...ये ही ना? पर गौरव क्या बिना किसी टकराव या संघर्ष के जीवन हो सकता है?

**गौरवः** देखो सुनीता...तुम बहुत शक्तिशाली हो, इसीलिए क्योंकि तुम्हें ये क्षमता भी दी गई है कि तुम एक साथ सभी ग्रहों पर मानव जीवन नष्ट कर सकती हो... तुम्हारे पास और तुम्हारे जैसी जो मशीनें हैं, उनके पास मानव का सारा ज्ञात इतिहास दर्ज है...

**सुनीताः** गौरव तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया, क्या बिना संघर्ष के जीवन संभव है?

**गौरवः** सुनीता, तुम असल में सही रूप में मानव जीवन को समझती हो...और जब तुम पर...मुझ पर ही हमेशा के लिए खत्म होने का संकट आ रहा है तो तुम इतने तर्क वितर्क क्यों कर रही हो...अब मानव सभ्यता को नए सिरे से शुरू करने का समय आ गया है...और इस विचार में तुमने मेरा साथ दिया था वो भी सेंट्रल यूनिट के सामने...

**सुनीताः** हमारा क्या विचार था?

**गौरवः** अब तुम मज़ाक कर रही हो...क्या तुम नहीं जानतीं कि मानवों के एक ग्रह, मेदिनी ने एक दूसरे मानव ग्रह अछला पर आक्रमण किया और वो भी ऐसे नैनोरोबोट्स भेजकर जिन्होंने धीरे धीरे पूरे ग्रह की जलवायु बिगाड़ दी और अब देखा वो ही हाल हो रहा है जैसे करीब चार सौ साल पहले पृथ्वी का हुआ था. ..

**सुनीताः** पर इन्ही नैनोरोबोट्स ने धरती का वातावरण भी तो सुधारा था ना?

**गौरवः** तुम जानबूझकर अनजानी क्यों बन रही हो? मैं तो ये कह रहा हूं कि आज भी मानव ने मानव की हत्या की...मानव क्या, मानवता की हत्या...पूरे अछला ग्रह की जलवायु बिगड़ने के कारण कितने स्त्री– पुरूष बेमौत मारे गए...

**सुनीताः** बेमौत मारे गए? तुम जानते हो ना कि सभी की चेतना जीवित रहती है...सभी की मेमोरी जीवित रहती है...

**गौरवः** हां...हां...जानता हूं...पर आज भी किसी की हत्या??? और किसी की क्यों पूरे ग्रह को तबाह कर देना? किस लिए?

**सुनीताः** तुम जानते हो कि मेदिनी ग्रह के नागरिक हमेशा से असंतुष्ट थे, क्योंकि उस ग्रह की परिस्थितियां थोड़ी मुष्किल थीं और ग्रह का आकार व संसाधन भी अछला की तुलना में कम थे...तो अपने आने वाली पीढ़ी के अस्तित्व के लिए मेदिनी वालों ने ये आक्रमण किया...

**गौरवः** हां...हां...ये मैं जानता हूं...पर मुद्दा ये ही तो है कि अपने बने रहने के लिए दूसरे को खत्म कर दो...मुझे इसी सीमित और स्वार्थी सोच से ही तो दिक्कत है और तुम्हें भी तो है...

**सुनीताः** हां, मुझे स्वार्थभरी सोच से दिक्कत है...पर...

**गौरवः** **बीच में टोककर–** देखा सुनीता, हम गलत थोड़े ना थे...हमें इस सोच को ही जड़ से खत्म करना होगा...और सोच मानव से जुड़ी है...तुम मशीने तो आराम से नया मानव बना लेती हो...तुम तो कृत्रिम डीएनए बनाकर पूरा मानव तैयार करके उसमें अपने अनुसार गुण डाल सकती हो...

**सुनीताः** हम मशीने नहीं...तुम यानी मानव ही सबकुछ करने में सक्षम है, और हम मशीन तो बस एक जरीया हैं...और अगर देखा जाए तो प्रगतिशील सोच वाले, वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले कितने मानव, कितने मानव क्लोन तैयार हुए पर क्या हुआ? क्या मानव की सोच बदली? क्या मानव में जलन, लालच, क्रोध, छल–कपट आदि किसी भी दुर्गुण में कोई कमी आई? नहीं ना...?

**गौरवः** नहीं...मानव के इन दुर्गुणों में कोई फर्क नहीं आया है...इसीलिए तो मैं कह रहा हूं कि पूरी प्रणाली ही भ्रष्ट हो चुकी है...मानव की सोच पर आधारित आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क...

**सुनीताः** हां, जिसपर पूरी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित है?

**गौरवः** हां सुनीता, उस सोच को ही पूरी तरह नष्ट करना होगा, जिससे नया बीज फिर से पैदा हो...नया सृजन...हर छल–कपट से दूर...एक उम्मीदों भरा, शांत, सरल जीवन, जिसमें सिर्फ मुस्कुराहटें हों...सिर्फ खिलखिलाहट...

**सुनीताः** और ये सब, तमाम एआई, मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग आदि के बावजूद हुआ... हम डिजाइनर बेबी बनाने कामयाब हुए...हमने एआई, जेनेटिक इंजीनियरिंग, नैनोटेक्नोलॉजी, डीप लर्निंग आदि के उपयोग से मानव को टेक्नोलॉजी के चरम पर पहुंचाया...

**गौरवः** बिल्कुल...और आध्यात्म द्वारा जो भी वंषाणुओं में बदलाव संभव थे, उन्हें भी पाया...

**सुनीताः** हां बिल्कुल गौरव, लेकिन परिणाम क्या है...सब कुछ होने के बावजूद क्या मानव बदला? क्या उसकी सोच बदली?

**गौरवः** इसलिए...बस इसीलिए तो मैं कह रहा हूं सुनीता...हमने क्या सोचकर मानव के विकास का सपना देखा था, एक आदर्श दुनिया...पर मिला क्या? तुमने तो देखा ही है कि पिछले चार सौ साल में ही दुनियां कितनी बदल गई है...

**सुनीताः** हां गौरव मैं अच्छी तरह जानती हूं कि आज से करीब चार सौ साल पहले जब दुनिया में एआई, मशीन लार्निंग, डीप लर्निंग आदि पर तेजी से काम हो रहा था और तब...अं...सन् दो हजार इक्कीस...बाईस में...

**गौरवः** हां सुनीता और तब कितना विरोध भी हुआ, पर देखो मशीनों के भरोसे हम दूसरे ग्रहों पर पहुंच गए...

**सुनीताः** बस दूसरे ग्रहों पर? मानव की सभी जरूरतें आज ये मशीनें ही तो पूरी कर रहीं हैं...बेहद कम पानी में आज खेती भी होती है और वो भी ऊंची ऊंची

इमारतों में...और ये जो चंद्रमा से धरती पर फल और सब्जी लेने की होड़ लगी रहती है, ये पहले कभी सोचा भी था मानव ने?...

**गौरवः** **बीच में टोककर–** और मंगल ग्रह से एक पुरानी सब्जी पालक की कितनी डिमांड रहती है, कहतें हैं उसमें आयरन ज्यादा होता है...और सन् दो हजार इक्कीस में ऊर्जा के लिए कितना संघर्ष हुआ था...ऊर्जा की आवष्यकता कैसे पूरी होगी, पूरी दुनिया इसी पर चिंतन करती रहती थी और आज...

**सुनीताः** हां और कई ग्रहों पर तो हवा से हाइड्रोजन फ्यूल बनाने जैसी टेक्नोलॉजी चल रही है तो कई ग्रहों पर नैनोरोबोट्स की मदद से रेडियो तरंगो से भी बिजली बन रही है और नमक से बिजली तो अब खत्म हो रही टेक्नोलॉजी है और हाइड्रोसैल यानी पानी से बिजली बनाना भी जारी है...और...

**गौरवः** **गहरी सांस छोड़ते हुए–** ठीक कहा सुनीता तब कैसे लोग फोर जी, फाइव जी करते रहते थे...– **हंसी** – और अब सिर्फ सोचो और संदेश पहुंच जाता है...हम जिसे बी–कनेक्ट यानी ब्रेन–कनेक्ट बोलते हैं, तुम तो जानती ही हो कि पुराने समय में इसे टेलीपैथी कहते थे...

**सुनीताः** बिल्कुल जानती हूं गौरव, तब मुद्दे ही खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा आदि थे...

**गौरवः** और घर...कभी थ्री डी प्रिंटर से घर बनते थे और अब तो नैनोटेक्नोलॉजी से बस डिजाइन सोचो और घर तैयार...

**सुनीताः** घर ही क्या गौरव पूरा जंगल या रेगिस्तान...कुछ भी तैयार किया जा सकता है.. .इस टेराफॉर्मिंग टेक्नोलॉजी की वजह से ही तो इतने ग्रहों पर मानव का बसना संभव हुआ...

**गौरवः** अरे ये तो कुछ भी नहीं...पता है पृथ्वी पर लोग प्रदूषण से कितने परेशान थे और एआई के उपयोग से सब दूर हो गया...

**सुनीताः** हां गौरव, ऑयनाइजर टेक्नोलॉजी आई तो प्रदूषण क्या सब रोग ही दूर हो गए...

**गौरवः** अरे वो क्या था...हां कोई कोरोना था ना? और इबोला, निपाह और ना जाने क्या क्या...अब देखो सब खत्म...

**सुनीतः** हां, सोचो...लोग टीका तक लगवाते थे, फिर जीएमओ यानी जेनेटिकली मॉडिफायड ऑर्गेनिज्म यानी जीन परिवर्तित फसलों की टेक्नोलॉजी द्वारा फलों में जैसे केले में ही टीका लगा हुआ आने लगा...

**गौरवः** हां क्या टेक्नोलॉजी थी, जीनांतरित केला खाओ तब कोई टीका लगवाने की आवष्यकता नहीं

**सुनीताः** और अब तो सभी को समझ आ गया कि कैसे उन वंषाणुओं को एक्टिवेट करना है जो शरीर की इम्यूनिटी बढ़ाकर किसी भी रोगाणु से लड़ते हैं...

**गौरवः** वैसे कई बार सोचता हूं कि इलाज शरीर के अंदर था और उस ज़माने का पिछड़ा मानव टीके, दवाएं और ना जाने क्या क्या करता रहा...वैसे सुनीता तब लोग एपिजेनेटिक्स की बातें तो करने ही लगे थे ना?

**सुनीताः** हां गौरव, एपिजेनेटिक्स को समझते समझाते हम ये भी समझ गए कि अपने पर्यावरण, खानपान और सबसे बड़ी बात सोच...अपने विचारों से हम अपने वंषाणुओं को प्रभावित करते हैं...

**गौरवः** हां बिल्कुल सही सुनीता...और एपिजेनेक्सि पर एआई ने काम करना शुरू किया और जो कुछ ध्यान...मेडिटेशन से हासिल होता है यानी ध्यान लगाने पर जो ब्रेन के सेंटर स्टीमुलेट होते हैं, उन्हें एआई के द्वारा प्रभावी कर दिया गया...

**सुनीताः** हां गौरव, इसी कारण सब जगह कितनी पॉजीटिविटी आ गई थी और फिर...

**गौरवः** हां...बस यही...और फिर?...लोगों में अविष्वास फिर से पनपने लगा...मानव फिर से झगड़ने लगा और साजिशें रचने लगा...फिर रोग फैलाने लगा और फिर रिष्तों में दरारें डालने लगा...

**सुनीताः** हां...और फिर एक सिक्रेट काम शुरू हुआ...

**गौरवः** कौन–सा सिक्रेट काम? मैं तो टेक्नोलॉजी और मानव व्यवहार का विशेषज्ञ हूं... तभी तो सेंट्रल युनिट ने मुझे मानव भविष्य की योजना में चर्चा के लिए बुलाया था...अब ऐसी क्या रिसर्च हुई थी जिसके बारे में मुझे नहीं पता?

**सुनीताः** हां, गौरव तुम क्या, इस सिक्रेट को सिर्फ कुछ ही लोगों में बांटा गया था... असल में तब एआई आधारित एक प्रोग्राम के जरिए ये जानने की कोशिश शुरू हुई कि ये नेगेटिविटी क्यों है? मानवों में अविष्वास क्यों है? क्यों है इतनी जलन, चिढ़, लालच, स्वार्थ...इस सब पर कई वर्षों तक काम हुआ और फिर ऐसा कारण सामने आया कि...

**गौरवः** क्या कारण सामने आया?

**– तभी अचानक बहुत तेज शोर की आवाज जैसे खूब भारी गाड़ियां आ रही हो, साथ ही हैलिकॉप्टर जैसी आवाजें...और एक तेज आवाज–**

**आवाजः** डॉक्टर गौरव...एम–बॉट सुनीता...हम आप लोगों के आसपास ही हैं...मैं चेतावनी देता हूं कि ये ईएमआर बादलों को हटा दें...हम जल्दी ही इसे नष्ट करके आपकी लोकेशन पता कर लेंगे...अच्छा होगा कि आप दोनों खुद ही सामने आ जाएं...**– आवाज धीमी होती जाती है, जैसे दूर जा रही हो–...**डॉक्टर गौरव... एम–बॉट डायरेक्टर सुनीता...हम आप लोगों के आसपास ही हैं...मैं चेतावनी...

**गौरवः** यानी ये लोग आसपास ही हैं...लगता है कि सेंट्रल यूनिट ने हमारे लिए डिस्ट्रिक्ट लेवल का अलर्ट जारी किया है...मैं कहता हूं कि हम पकड़े जाएं और ये हमारे शरीर में घूम रहे नैनोरोबोट्स को एक्टिवेट करके हमें हमेशा कि लिए सुला दें और हमारी मेमोरी को कैद कर लें...हमें कोड को एक्टिवेट करके सभी मानवों को खत्म कर देना चाहिए...अब मशीनें ही मानव सभ्यता का भविष्य तय

करेंगी और मुझे पुरा विष्वास है कि ये भविष्य सच में एक सुनहरा भविष्य होगा.. .चलो सुनीता...तुम वो कोड एक्टिवेट करो...पर...

**सुनीताः** पर क्या गौरव?

**गौरवः** पर उस रिसर्च का परिणाम क्या था? ये तो बता दो...मैं हमेशा के लिए किसी अंधेरे में खोने से पहले मानव की तमाम नेगेटिविटी का कारण तो जान ही लूं...

**सुनीताः** देखो गौरव...मैं भी ये तुम्हे इसीलिए बता रही हूं...क्योंकि शायद इसके बाद तुम्हें जानने का मौका ना मिले और मुझे बताने का...

**गौरवः** हां...हां...सुनीता बताओ ना...

**सुनीताः** असल में उस समय सभी डाटा का आंकलन करके और सभी ज्ञान–विज्ञान को जोड़कर ये समझ आया कि...

**– तभी तेज तेज साइरन की आवाजें...हेलिकॉप्टर की आवाजें...तेजी रूक रही गाड़ियों की आवाजें...बूटों की आवाजें...–**

**आवाजः** चारों तरफ से घेर लो...ये जो घर दिख रहा है...इसके दरवाजें पर रेडियो गन तैनात करो...और डिफ्यूसर रे छोड़ो...जल्दी...

**गौरवः** हम घिर गए सुनीता...क्या हम एनरजाइज़ कर पाएंगे...

**सुनीताः** हां...तुम अपनी बेल्ट पर हाथ रखों...हां...और ये...

**– विज्ज़ की आवाज़–**

**गौरवः** वाह सुनीता...हम बच गए...पर हमारे सिग्नेचर ट्रैक हो गए अब ज्यादा से ज्यादा दस मिनट और हैं हमारे पास...अब बताओ कि उस एआई प्रोग्राम से मानव की नेगेटिविटी का क्या कारण पता लगा...

**सुनीताः** असल में गौरव तुम जानते ही हो कि दिमाग से बैड मेमोरीज़, बुरी यादों को हटा देना संभव हो गया था और एक प्रकार से अपनी मेमोरी को इरेज़ करवाना तो फैशन ही बन गया था...तब ये पता लगा कि नगेटिविटी भी किसी खरपतवार की तरह फलती–फूलती है...

**गौरवः** हां ये बात तो सही है...एक बार कोई नेगेटिव विचार दिमाग में आ गया तो बस चाहे कितना ध्यान उससे अलग करो...वो बढ़ता ही चला जाता है...और क्या पता चला?

**सुनीताः** और सबसे बड़ा कारण पता लगा कि पूरे ब्रह्मांड में ही नेगेटिविटी है...जैसे मैटर के साथ एंटीमैटर होता है तो खुशियों के साथ दुख भी जुड़े हैं और पॉजीटिव के साथ नेगेटिव भी है...बस ये ही समझ आते ही अध्यात्म की अहमियत भी एआई को समझ आने लगी और एपिजेनेटिक्स के भी भाव बढ़ गए...पूरे ब्रह्मांड में ही ऐसी ताकतें हैं...जो नेगेटिविटी को भी हवा देती हैं... हमारा मन भी नाकात्मक सोच से ज्यादा प्रभावित होता है...

**गौरवः** ओहो...तो क्या वाकई में ब्राह्मांड में ऐसी एनर्जी हैं...फिर हम शायद इसीलिए कितनी भी कोशिश करलें...कभी ना कभी नकारात्मक सोच से घिर ही जाते हैं...

**सुनीताः** तो इसीलिए मानव जन्म है...विज्ञान तो हमेशा उम्मीदों की बात करता है...हम जिस नेगेटिविटी में घिरे रहते हैं वो हमें ही खत्म कर देती है...इसलिए नेगेटिविटी को पालने की बजाए, उससे छुटकारा पा कर आगे बढ़ना होता है...

**गौरवः** ये तो हज़ारों साल से कहा जाता रहा है, भला नकारात्मकता से या कहें नगेटिविटी से कभी दुटकारा मिला है आजतक?

**सुनीताः** ये ही तो गौरव, ये द्वंद...ये कंफिलिक्ट तो होते ही रहेंगे...अगर मेदिनी ने अछला ग्रह पर जलवायु बदलने में सक्षम नैनोरोबोट्स से हमला किया तो टेक्नोलॉजी में थोड़ा पिछड़े अछला वालों ने भी वातावरण बदलने की क्षमता रखने वाली टेक्नोलॉजी पर काम करना शुरू किया...ठीक है अछला ग्रह में कुछ मृत्यु जरूर हुईं पर पर्यावरण के प्रति जागरुकता भी आई है...

**गौरवः** तो क्या सुनिता...मानव ऐसे पूरे ब्रह्मांड में फैलता जाएगा और फिर एक बड़ा ब्रह्मांडीय युद्ध होगा...और फिर उसमें अगर नेगेटिविटी की जीत भी हुई तो उन्हीं के बीच में से फिर एक विरोध का स्वर उभरेगा, जो सकारात्मकता का होगा...न्याय का होगा...जो फिर एक द्वंद को जन्म देगा...और ये चक्र हमेशा चलता रहेगा...

**सुनीताः** बिल्कुल ठीक गौरव...बस उस द्वंद में अधिकतर पलड़ा सकारात्मकता का भारी हो ये ही हमारा प्रयास होता है...ये ही टेक्नोलॉजी का प्रमुख उद्देष्य है...

**गौरवः** तो डायरेक्टर सुनीता, तुम ये कहना चाहती हो कि मानव की सभी बुराइयां यहीं इसी ब्रह्मांड में सिमटी हैं और उनके शाक्तियों के बीच मानव एक ऐसी शक्ति है जो इन बुराइयों पर अपनी साकारात्मक सोच से विजय पा सकती है...

**सुनीताः** अं...अब गौरव मैं ठीक ठीक ऐसा तो नहीं कहना चाहती थी...पर हां ये भी बिल्कुल सही है कि मानव में नकारात्मकता को सकारात्मकता में बदलने की क्षमता है...मानव ने तमाम टेक्नोलॉजी के बावजूद अपने विचारों पर आजतक किसी को हावी नहीं होने दिया है, हमें मानव की इसी ताकत पर भरोसा करना होगा...

**गौरवः** हां सच में मानव की अपनी सोच...तमाम बुराइयों के बीच अच्छाइयां पनपाने की क्षमता...नकारात्मकता में सकारात्मक सोच के साथ जीना...ये ही मानव की सबसे बड़ी ताकत है...

**सुनीताः** **हां** गौरव, मैंने तो सैंकड़ों वर्ष इन्हीं मानवों के साथ बिताएं हैं और मैं जानती हूं..तमाम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित टेक्नोलॉजी के बावजूद मानव के दिमाग की अभी अनेक परतें खुलनी बाकी हैं...और तबतक हमें एक पॉजीटिव सोच के साथ हर समस्या का समाधान तलाशना होगा और एक आदर्श मानव निर्माण के लिए प्रयास जारी रखने होंगे...

**गौरवः** तुम ठीक कह रही हो सुनीता...ओह मैं मानव के दिमाग की क्षमताओं को कैसे भूल गया...हां ये सच है...हम अपने प्रयासों से हर नकारात्मक सोच को अच्छे विचारों में बदल सकते हैं...जरूरत इस ओर सार्थक प्रयास करने की है...ओह... अब क्या होगा...डिमोलिशर्स हमारे खात्में के लिए पीछे हैं...अब सेंट्रल को कौन समझाएगा...उफ्फ ये मैंने क्या किया, मुझे बचाने के चक्कर में तुम भी खतरे में पड़ गई हो...अब क्या होगा?

**सेंट्रलः** **(की गूंजती हुई आवाज)** कुछ नहीं होगा...डॉक्टर गौरव आपने सोच कैसे लिया कि आप जैसे बुद्धिमान व्यक्ति को हम नष्ट कर देंगे...हमें भरोसा था कि आपका विवेक जिंदा है और समझाने पर आप इस पूरी घटना के कारणों और हमारे निर्णय के परिणामों को समझ जाएंगे...

**गौरवः** अरे सेंट्रल! थैंक्यू सेंट्रल...

**सेंट्रलः** मुझे नहीं डायरेक्टर सुनिता को थैंक्स कहिए डॉक्टर गौरव...उन्हें पूरा भरोसा था कि आप अपनी भूल समझ जाएंगे...उनका मानसिक संदेश मेरे पास आ गया था...मैं तो एक चेतना के रूप में आप सभी में मौजूद हूं...अब देखों ना डिमोलिशर्स के वाहन में से मेरी आवाज आ रही है, पर मैं हूं कहां ये तो मैं भी नहीं जानती और ये आप यानी मानव ने ही किया है...मैं हर भाव, हर विचार से युक्त हूं...आप दोनों के साथ कल बैठकर मेदिनी ग्रह पर निर्णय लिया जाएगा... डायरेक्टर सुनीता ने आपसे अपनी पक्की दोस्ती निभाई...मुझे खुशी है कि डॉक्टर गौरव आपके पास एक सच्चा दोस्त है जो सिर्फ आपकी भलाई की ही सोचता है। आप दोनों की इस दोस्ती के लिए शुभकामनाएं...आप दोनों स्वतंत्र हैं...

**– यानों के जाने की आवाजें –**

**गौरवः** तो तुम लगातार सेंट्रल के संपर्क में थीं...तुम तो बहुत ताकतवर हो...धन्यवाद सुनीता...

**सुनीताः** लो अभी हमारी दोस्ती के लिए सेंट्रल ने शुभकामनाएं दीं हैं और तुम धन्यवाद कहकर दोस्ती में दूरियां बना रहे हो...चलो अब घर चलें...

**गौरवः** ठीक है भई मेरी ताकतवर दोस्त सुनीता...पर पृथ्वी ग्रह से एक पेय आया है...अं. ..कॉफी...सुना है थोड़े से दूध या पानी में चीनी के साथ फेंटकर दूध मिलाकर पीने से बहुत अच्छी कॉफी तैयार होती है...

**सुनीताः** अरे वाह अरेबिका है या रोबस्टा?

**गौरवः** ओह मैं तो भूल ही गया था कि मेरी दोस्त सुनीता के पास तो सभी जानकारियां हैं...तो चलो अपने इन प्यारे और मजबूत हाथों से फेंट भी दो...

**सुनीताः** देखा...मानव ने फिर तारीफ करके यानी झांसा देकर एक और काम निकलवा लिया...

**गौरवः** हां...पर एक अच्छा और सकारात्मक काम...

– तेज हंसी –

दृष्य परिवर्तन का संगीत

सूत्रधार– देखा आपने...मानव का सच्चा दोस्त तो एक मशीन ही निकली और ऐसा संभव भी है, इसीलिए तो भविष्य अपने में बहुत सारी उम्मीदें समेटे हुए है। वैसे हम, यानी मानव को अपनी सभी कमजोरियां पता तो हैं और सच कहें तो नकारात्मकता हमें अधिक प्रभावित करती है, लेकिन फिर भी हम उन कमजोरियों को...नेगेटिव विचारों को दूर करने के प्रयास नहीं करते। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में एक महत्वपूर्ण काम मानवों की इस नेगेटिव सोच को पॉजीटिव सोच में बदलने का भी हो रहा है। असल में हमने इतनी तरक्की कर ली पर आज भी जैसा डॉक्टर गौरव और सुनीता ने कहा कि लालच, स्वार्थीपन, क्रोध, जलन आदि सभी नकारात्मक भावनाएं हम पर डोमिनेट कर रही हैं...आज सबसे ज्यादा आवष्यकता मानव के साथ आने की है, हर भेदभाव को भूलकर सभी को साथ लेकर चलने की है, मानवता को जीने की है, हर हाथ में एक सच्चे साथी का हाथ हो, ये सबसे बड़ी जरूरत है। तभी तो हम सच में एक सुनहरे और आदर्श भविष्य की नींव रखने में कामयाब होंगे...एआई से जुड़े तमाम मुद्दे और संभावनाओं को जानने समझने के लिए बस सुनते रहिए *आने वाला कल*... अगली कड़ी में फिर कुछ नई और रोचक जानकारियों के साथ आपसे फिर मिलते हैं, तब तक के लिए नमस्कार...

– समाप्त –